Vol. 8, Issue: 4, April: 2020
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

कहानी ''पिसरके लबू फरोश'' चुक़ंदर बेचने वाला लड़का के लेखक समद बहरंगी

डा. तसनीम कौसर चिश्ती
एसोसिऐट प्रोफेसर, फारसी विभाग
करामत हुसैन एम.जी. पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

समद बहरंगी बच्चों के लिए कहानियाँ लिखने वाले लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं। डनका जन्म 1939ई. में तबरेज़ के चिरंदाब कसबे में हुआ। उन्हों ने अपनी प्रारम्भिक षिक्षा में ही प्राप्त की और उन्हों ने 1957ई. में ग्रेजूएषन किया। उसी वर्श से उन्हों ने आज़र क़सबे के गाँव के स्कूल में पढ़ाना षुरू किया जोकि तबरेज़ से 50 किलोमीटर दूरी पर था। जहाँ उन्होंने 11 वर्श तक अपने पठन पाठन कार्य को जारी रखा।

वह आज़री लोक कथाओं से प्रेम करते थे। डनका आज़री लोक कथाओं के फारसी अनुवाद पर आधारित लोक कथाओं का संग्रह 1965ई. में प्रकाषित हुआ। उनके इस कार्य ने उन्हें तेहरान के सहितक लोगों के बीच पहचान दिलाई। डनके द्वारा एक लेख जो षिक्षा की समस्याओं से सम्बंधित था एवं कुछ अन्य बच्चों की वास्तविक कहाँनियाँ जो वास्तव में सामाजिक मुद्दों पर थीं और आज़री लोक कथाओं का दूसरे अंक ने उन्हें नई नसल के लेखकों के बीच अच्छी पहचान दिलाई।

सितम्बर 1968इ. में उनके जीवन में एक हादसा हुआ जब वह केवल 29 वर्श के थे तो वह अरास नदी में डूब जाने में वास्तव में षाह की सुरक्षा बल ''सावक'' का हाथ था। उस समय उनकी सु प्रसिद्ध बच्चों की कहानियाँ जिस में '' माहि–ए–सियाह कूचूलू (छोटी काली मछली) प्रेस में छपने के लिए थीं। जेकि बाद में 1969इ. में छपीं। ''24 साअत दर खुवाब वा बेदारी'' (24 घंटे बेचैनी के) और ''यक हुलू यक हज़ार हुलू'' (एक आडू और हज़ार आडू) भी इन की दोनों कहानियाँ छपीं। समद बहरंगी राजय की किताबों में दोनों चीज़ो यानि जो कंटैंट और क्रियाविधि अथवा पाठयक्रम के आलोचक थे। डनका मान्ना था कि पूरा षिक्षा तंत्र ईरानी बच्चों के लिए विषेश कर गाँव के बच्चों के लिए पुराना घिसा पिटा और अजनबी है मसद बहरंगी की ख्याति 1979ई0 के इंकिलाबके बाद भी रही। डनकी अकेली कहानी भी बड़े फनकारों के लिए महान थी। इस लिए उनकी कहानियाँ बराबर पूरे 1980ई0 और 1990 के दषक में उनकी लोक कथाओं को आज़री भाशा में अनुवाद किया गया।

समद बहरंगी के साहितिक कारनामे
1–24 साअत दर खुवाब वा बेदारी (बेचैनी के 24 घंटे)
2–बे दुम्बाले फलक (यक़ीन की तलाष में)
3–तलखून
4–माही–ए–सियाह कूचूलू (छोटी काली मछली)
5–पिसरके लबू फरोष (छोटा चुक़ंदर बेचने वाला लड़का)
6–अफसान–ए–ईषक (मुहब्बत की कहानी)

ईरानी लेखक समद बहरंगी द्वारा रचित कहानी ''पिसरके लबू फरोश'' चुक़ंदर बेचने वाला लड़का का हिन्दी अनुवाद

कुछ वर्ष पूर्व मैं एक गांव में अध्यापक था। हमारा स्कूल केवल एक कमरे पर आधारित था जिसमें एक द्वार एवं एक ही खिड़की थी। इस की गांव के सौ गज़ से अधिक दूरी ना थी मेरे 32 शिष्य थे। इनमें से 15 लड़के कक्षा 9 में 8 छात्र कक्षा 2 में 6 छात्र कक्षा 3 में एवं 3 लड़के 4 कक्षा में हुआ करते थे। वहां मुझे पतझड़ के मौसम के अंतिम महीनों में भेजा गया था। दो तीन महीने तक बच्चे बिना टीचर के रहे थे। मुझे देखकर प्रसन्न हो गए। चार पांच दिन तक कक्षाऐं अनियमित रहीं। अंततः मैं लड़कों को यहां वहां कारखानों और वनों से एकत्रित करने में सफल हो गया तकरीबन सारे बच्चे कालीन बनाने वाले कारखाने में काम करते थे। बुद्धिमान लड़के बहुत कठिनाई

से दस या पंद्रह रियाल रोज कमा लिया करते थे। यह हाजी कुली शहर का था। इस कार्य में उसे बहुत लाभ होता था। शहर के मजदूर अग्रिम पैसे मांगते और 15 तूमान से अधिक की मांग करते थे परंतु यहां गांव में अच्छे से अच्छा मजदूर पच्चीस, तीस रियाल ही मांगता था।

मुझे गांव से आए हुए दस दिन से अधिक नहीं हुआ था कि एक दिन भयानक बर्फबारी हुई और जमीन पर बर्फ जम गई। हम लोगों ने दरवाजे और खिड़की के छेदों के ऊपर कागज चिपका दिया था ताकि ठंड अंदर ना आए। एक दिन चौथी एवं तीसरी कक्षा को इमला बोल रहा था और पहली एवं दूसरी कक्षा के छात्र बाहर थे। धूप निकली थी और बर्फ पिघल कर पानी होने वाली थी। मैंने देखा कि खिड़की से बाहर बच्चों ने एक आवारा कुत्ता पकड़ रखा था और चारों ओर से उसे घेरकर बर्फ के गोले उसे मार रहे थे। गर्मियों में वह पत्थर और ढेलों से कुत्ते का पीछा करते और जाड़ों में बर्फ का गोला बनाकर उन्हें मारते। थोड़ी देर के पश्चात एक लड़के की आवाज द्वार के पीछे से सुनाई दी। ऐ चुकंदर लाया। बच्चे भुना हुआ और मीठा चुकंदर लाया.....। उसने कक्षा के मॉनिटर से पूछा काजिम प्यारे यह कौन हैं?

मॉनिटर बोला यह कोई अजनबी नहीं है सर ..... फेरी वाला है। ..... जाड़ों में चुकंदर बेचता है इसे अंदर आने को कह दूँ? उसने द्वार खोल दिया और फेरी वाला अपनी टोकरी समेत अंदर आ गया। वह अपने सिर पर एक पुरानी सूती षाल लपेटे हुए था। एक पैर का जूता मामूली सा था और दूसरे में चमड़े के बालों वाला जूता पहने हुए था। उसका मैला कोट घुटनों तक था और हाथ कोट की आसतीनों में छिपे जा रहे थे। उसकी नाक ठंड के कारण लाल हो चुकी थी। उसकी आयु लगभग दस या बारह वर्ष की थी उसने सलाम किया। और टोकरी को नीचे रखकर बोला जनाबे आली। क्या मुझे अज्ञा है कि थोड़ी देर अपना हाथ अंगेठी से सेंक लूँ? क्यों उसने उसे अंगेठी के समीप बुला लिया। मैंने अपनी कुर्सी उसे पेष? वह नहीं बैठा। मैं श्रीमान। मैं ज़मीन पर इस प्रकार से बैठ सकता हूँ।

बच्चे भी फेरी वाले की आवाज सुनकर आ गए थे। कक्षा में थोड़ी भीड़ हो गई थी। मैंने सभी बच्चों को उनके स्थान पर बिठा दिया फेरी वाला जैसे ही थोड़ा गरमाया बोला, श्रीमान आपको चुकंदर पसंद हैं? और मेरे उत्तर दिए बिना ही अपनी चुकंदर की टोकरी के पास चला गया। टोकरी पर रखे गंदे रंग बिरंगे कपड़े को हटाया। चुकंदरों से सोंधी सोंधी महक आने लगी । चुकंदरों पर छुरी का एक टूटा हुआ टुकड़ा रखा था। फेरी वाले ने एक चुकंदर चुना और मेरे हाथ में देते हुए बोला श्रीमान। अगर आप खुद ही इसका छिलका उतार लें तो अच्छा होगा। सम्भवता मेरे हाथ ..... हम देहाती लोग हैं..... शहर नहीं देखा है हमें तरीका नहीं आता है..... वह एक अनुभवी दुनिया देखे मानव के समान बातें कर रहा था। चुकंदर को मैंने अपने हाथों से मसला तो उसका गंदा छिलका उतर गया और उसके दिल में घर करने वाले लाली लिए हुए गूदे उभर आए। मैंने एक फांक काटी मीठी मीठी थी।

कक्षा के अंतिम छोर में नौरोज़ बोल उठा किसी का चुकंदर इस फेरी वाले से अधिक अच्छा नहीं होता है सर.... मॉनिटर का काज़िम बोला। इसकी बहन भूनती है सर और यह बेचता है इसकी माता बीमार रहती हैं.....

मैंने फेरी वाले लड़के के मुख पर नजर डाली। उसके होटों पर मर्दाना मुस्कान थी। उसने अपनी सूती षाल खोल दी थी। उसके सर के बालों ने उसके कानों को ढक रखा था बोला, हम में से हर व्यक्ति कोई ना कोई कार्य करता है। हम इसी लायक़ हैं श्रीमान। मैंने पूछा तुम्हारी माता को क्या हुआ है फेरी वाले?

बोला उसके पैर में हरकत नहीं है। गांव का मुखिया कहता है कि उसे फालिज मार गया है क्या हुआ है मुझे अच्छी तरह मालूम नहीं श्रीमान। मैंने पूछा और तुम्हारे पिता?

वह मेरी बात को काटते हुए बोला उनका देहांत हो गया। उनमें से एक ने कहा इसे लोग असगर क़ाकची कहा करते थे सर। फेरीवाला वह अच्छा घुड़सवार था आखिर एक दिन पहाड़ों पर गोली खाई और मारा गया। उसने मार डाला घोड़े पर ही मार डाला। मैंने थोड़ी इधर उधर की बातें कीं। उसने दो तीन अठन्नियों का चुकंदर बच्चों को बेचा। मुझसे पैसे नहीं लिये। बोला इस बार आप मेरे अतिथि हैं। दूसरी बारी में आपसे पैसे ले लूंगा। देखिए। हम ग्रामीण हैं परंतु थोड़ी बहुत तमीज की बातें हमें भी आती हैं श्रीमान। फेरी वाला बर्फ में चला जा रहा

था। गांव की ओर से हम उसकी आवाजें सुन रहे थे। वह कह रहा था। ऐ चुकंदर और मीठे चुकंदर.....चुकंदर लाया लोगों..... दो कुत्ते पीछे पूंछ हिलाते चले जा रहे थे।

मैंने उस फेरी वाले के बारे में बहुत सी बातें बताईं उसकी एक बहन थी जो उस से दो या तीन वर्ष बड़ी थी जब उनका पिता जीवित था तो यह लोग एक अच्छा जीवन यापन करते थे। फिर फक़ीर बन गए । पहले दोनों भाई बहन हाजी कुली के कारखाने के मालिक के पास गए । बाद में हाजी अली से उनका झगड़ा हो गया और वह वहां से चले आऐ। हुबा ने कहा। श्रीमान हाजी कुली बदमाश है। वह इसकी बहन को तंग किया करता था। बुरी नजरों से देखता था।

अफजल ने कहा। श्रीमान फेरी वाला चाहता था कि हाजी कुली को मार डाले श्रीमान। फेरी वाला बोला हर दिन एक बार कक्षा की ओर चला आता था। कभी कभी तो पूरे चुकंदर लेकर चला आता और कक्षा के किनारे बैठ कर ध्यानपूर्वक सबक सुनता। एक दिन मैंने उससे कहा फेरी वाले। मैंने सुना है कि तुम्हारा हाजी कुली से झगड़ा हो गया था? क्या तुम मुझे बताओ ना कि क्या हुआ था?

फेरी वाला बोलाः बीती हुई बात है श्रीमान। बेकार मैं आपको परेशान क्यूँ करूँ। मैंने कहा बड़ी प्रसन्नता होगी कि तुम्हारे झगड़े की बात आरंभ से अंत तक तुम्हारी जबान से सुनूँ?

फेरी वाले ने बताना प्रारंभ किया। बोला क्षमा करें। मैं और मेरी बहन बाल अवस्था में हाजी कुली के पास काम करते थे। मेरी बहन मुझसे थोड़ा पहले से वहां काम करती थी और मैं उसकी देखभाल में काम करता था। उसे दो तुमान मिलते थे और मुझे उससे कुछ कम। दो तीन वर्ष पूर्व की बात है मेरी माँ उस समय बीमार थी और काम नहीं करती थी परंतु बिलकुल बैठी भी नहीं रहती थी। कारखाने में अन्य तीस, चालिस बच्चे और भी थे। अब बीस हैं जिनमें से पांच छे बच्चे कार्य में दक्षता रखते थे। मैं और मेरी बहन सुबह जाते और शाम में लौटते थे। कारखाने में मेरी बहन परदा करती थी। मगर दूसरों से उसे कोई पर्दा ना था। उस कार्य में दक्षय और अनुभवी उस्ताद जो हमारे पिता समान थे। काम करने वाले दूसरे बच्चे और हाजी कुली से भी कोई परदा नहीं था जो हमारा मालिक था।

श्रीमान यह बेशर्म हाजी कुली सब से बाद में आता और हमारे सिर पर खड़ा रहता और मेरी बहन को घूरता रहता। कभी मेरे और उसके सिर पर हाथ फेरता और फिर यूं ही हंसते हुऐ चला जाता। मैं कुछ नहीं सोचता था कि वह हमारा मालिक है और हम से प्रेम करता है। कुछ समय बीत गया। एक दिन शुक्रवार, बृहस्पतिवार को जब हम अपनी मजदूरी लेने गऐ तो उसने मेरी बहन को एक तुमान अधिक दिया और बोला तुम्हारी माता बीमार हैं उन पर खर्च करना। फिर मेरी बहन के मुख को देखकर हंसा था जो मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा था। मेरी बहन डर गई थी वह कुछ ना बोली। हम अपनी माता के पास चले आऐ। जब से उसने सुना कि हाजी कुली ने मेरी बहन को एक से ज़्यादा मजदूरी दी है तो वह सोच में पड़ गई। बोली आगे उससे कभी अधिक पैसे ना लेना। उरो गैंने देख कि अध्यापक और बड़े लड़के आपरा गें खुरार फुरुर कर रहे हैं। वह राब इरा प्रकार रो एक दूसरे के कानों में इस प्रकार बातें करते जैसे वह चाहते हों कि हम उनकी बातें ना सुन पाऐं। जब सब लोग उसके पास चले जाऐं। अब दूसरे बृहसपतिवार को हम भाई बहन सब से अंत में मजदूरी लेने गए तो उसने कहा था कि तब उनकी मजदूरी देगा। उस दिन हाजी ने हमें श्रीमान पचास तुमान अधिक दिए और बोला कल मैं तुम्हारे घर आऊँगा। मुझे तुम्हारी माता से कुछ बातें करनी हैं। फिर मेरी बहन के मुख्य को देखा। मुझे जरा भी अच्छा गहीं लगा मेरी बहन का मुख पीला पड़ गया था। उसने अपनी नजर से, क्षमा कीजिएगा श्रीमान? आपने खुद कहा था कि मैं सब कुछ बता दूँ। यह अधिक रुपये हाजी कुली के सामने फेंक दिए और बोला हाजी साहब आप हमें अधिक पैसे दें तो मेरी माता बहुत बुरा मानती हैं? वह फिर हंसा और बोला गधे मत बनो प्यारे। यह तुम्हारे यह तुम्हारी माता के लिए नहीं। तुम्हारी माँ को अच्छा लगता है या बुरा।

तो उसने उस समय वह अधिक रुपए उठाकर मेरी बहन के हाथों में देना चाहा मेरी बहन पीछे हट कर वहां से भाग कर चली गई। मुझे क्रोध के कारण रोना आ रहा था। मेज पर मुगदर रखा था उसे मैंने उठा लिया और उस पर फेंक मारा। उससे हाजी कुली का मुख घायल हो गया रक्त का फव्वारा फूट पड़ा था। हाजी कुली ने चीख मारी और सहायता के लिए चिल्लाने लगा। जब मैं अपने घर पहुंचा तो मैंने देखा कि मेरी बहन मेरी माता के गले से लग कर रो रही थी। रात में श्रीमान। गांव का चौधरी आया। हाजी कुली ने उससे मेरी शिकायत की

थी और यह कहा था कि मैं उनसे रिश्ता करना चाहता हूं वरना मैं इस लौंडे को नम्बरदार के हवाले कर देता तो पिता से मुलाकात हो जाती। फिर चौधरी ने कहा कि हाजी ने उसे रिश्ते के लिए भेजा है। क्या कहते हो, हाँ या नहीं?

श्रीमान। हाजी कुली की पत्नी और बच्चे भी शहर में हैं। दूसरे चार गाँव में उसकी निकाह में आई हुई पत्नियाँ भी हैं। क्षमा करेंगे श्रीमान। हाजी बिल्कुल सूवर है। मोटा और ठिगना भी। खिचड़ी, दाढ़ी, नकली दाँत लगाए हुए जिसमें कुछ सुनहरे भी हैं और एक लम्बी तस्बीह हाथ में लिए रहता है। खुदा आप को सुरक्षित रखे। उस बूढ़े खूँसट सूवर से।

मेरी माता ने तो चौधरी से साफ साफ कह दिया कि अगर मेरी सौ बेटियां भी होतीं तो भी सम्भव नहीं। अब तक जो कुछ हमने बर्दाश्त कर लिया बहुत है। चौधरी तुमको तो मालूम है कि इस क़िमाष के लोग हम जैसे गांव वाले के राथ रिश्ता करने और शादी ब्याह करने के बिलकुल लायक नहीं है।

चौधरी साहब बोले। हाँ तुम ठीक कहती हो। हाजी कुली बीवी नहीं रखैल बनाना चाहता है परंतु अगर मंजूर नहीं करोगी तो बच्चों को कारखानों से निकाल देगा। इसके लिए नम्बरदारी की। दर्द सरी अलग और उसी तरह..... भाई सोच लो। मेरी बहन अम्मा से चिमटी हुई थी और हक हक करते हुए कह रही थी कि मैं अब कारख़ाने नहीं जाऊंगी ..... मुझे मार डालेगा ..... मैं उससे डरती हूँ ।

सुबह मेरी बहन काम पर नहीं गई। मैं अकेले ही गया था। हाजी कुली दरवाजे पर बैठा हुआ था और तस्बीह फेर रहा था मैं डर गया था। श्रीमान। करीब नहीं गया। हाजी कुली जिसने अपने जख़्म पर पटटी कर रखी थी बोला अंदर जा बेटा। कोई बात नहीं है। मैं डरता डरता उसके पास गया और जब तक दरवाजे से बाहर निकलूँ। उसने मुझे पकड़कर कारखाने के सहन में ढकेल दिया फिर लातों और घूँसों के साथ मुझ पर..... अंततः मैंने किसी तरह से अपने आप को छुड़ाया और दौड़ कर कल वाला मुगदर उठा लिया। उसने मुझे इतना मारा पीटा था कि मैं मरे हुए के समान हो गया था। मैं चिल्लाया, बेशर्म, हरामी, अब मैं जानूँ कि तू कितने पानी में है.....। मुझे असगर क़ाक़ची का बेटा कहते हैं।

फेरी वाले ने एक लम्बी साँस ली और दोबारा बोला। श्रीमान मैं चाहता हूं कि इसका खेल समाप्त कर दूँ। कारखाने के कारीगर जमा हो गए थे। वह मुझे पकड़कर मेरे घर ले आऐ। मैं रो रहा था एवं मेरे मुख से रक्त टपक रहा था। मैं गालियाँ बक रहा था और खून बह रहा था। अंततः मुझे थोड़ी देर बाद कुछ चैन मिल गया। हमारे पास एक बकरी थी। मैंने और मेरी बहन ने उसे बीस तुमान में बेच दिया और जो थोड़ी पूंजी हमने जमा की थी उससे एक दो महीना गुजारा किया फिर मेरी बहन रोटी बनाने वाले के यहां काम करने लगी और मुझे जो काम मिल गया मैंने करना प्रारंभ कर दिया। मैं बोला फेरी वाले तुम्हारी बहन शादी क्यूँ नहीं करती है? उसने बताया। एक रोटी बनाने वाले का लड़का उसका मंगेतर है। मैं और बहन दहेज जमा कर रहे हैं ताकि मेरी बहन के हाथ पीले हो सकें।

मैं इस वर्ष गर्मियों में घूमने के हिसाब से उस गांव में दोबारा गया था। फेरी वाले लड़के को चालीस, पचास भेड़ों के साथ देखा तो मैंने पूछा फेरी वाले तुमने अपनी बहन का दहेज इकट्ठा कर लिया। उसने कहा हाँ में उत्तर दिया। मैंने अपनी बहन की शादी भी कर दी..... अब मैं अपनी शादी के लिए पैसे इकट्ठा कर रहा हूं। जब से मेरी बहन अपने पति के घर गई है मेरी माता बिलकुल अकेली हो गई हैं। उन्हें एक व्यक्ति की आवश्यकता है जो उसका हाथ बटाए और दिल बहलाऐ। फिर शरमाते हुए बोला, निरादर हो गया श्रीमान। क्षमा कीजिए गा।

संदर्भ सूची

1.नक़षहा–ए–रंग रंग गिरोहे ज़बानों अदबियाते फारसी दानिषगाहे इस्लामी–ए–अलीगढ़ वर्श : जून सन 2005 इ.
2.आ प्राईमरी ऐनालिसिज़ आफ़ मॉडर्न परषियन परोज़ इंडो ईरानिका, वॉलयूम – 13 वर्श : 1971 ई.
3.बर रसी–ए– षेरो नसरे फारसी लेखक: महमूद कयानूष ईनतिषाराते मानी, तेरान ईरान
4.नया ईरानी अदब लेखक: डा. ज़हूरूद्दीन अहमद कराची, पाकिस्तान
5.अदाबियाते नवीने ईरान लेखक : मनूचेहर आर्यनपूर तेहरान 1973 ई.
6.अदाबियाते दास्तान लेखक : जमाल मीर सादिक़ी इंतिषाराते माहूर, तेहरान, ईरान